(B.A. Part II (H))
Paper III

Dr. Chiranjeev Kr. Thakur
Sociology

Lecture 1

नगरीय समुदाय की विशेषताएँ (Characteristics of Urban Community) :- नगरीय समुदाय की विशेषताएँ इस प्रकार हैं –

1. जनसंख्या की अधिकता – जनसंख्या की अधिकता तथा जनसंख्या घनत्व नगरीय समुदाय में पाया जाता है। भारत में 10 लाख से कम जनसंख्या वाले को नगर, 10 लाख से अधिक वाले को महानगर तथा 50 लाख से अधिक जनसंख्या वाले स्थान को विराट नगर कहा जाता है।

2. सामाजिक और व्यावसायिक विविधता – नगरीय समुदाय में सामाजिक और व्यावसायिक विविधता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। नगरीय समुदाय में विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं, वेशों, प्रजातियों एवं वर्गों के लोग एक साथ निवास करते हैं। नगरीय समुदाय के लोगों में रीति-रिवाज, रहन-सहन, सांस्कृतिक विभिन्नता देखने को मिलता है। इन सामाजिक भिन्नता के अतिरिक्त व्यावसायिक भिन्नता भी दिखाई देती है। कोई यहां शिक्षक है तो कोई मैकेनिक तो कोई वकील।

३ श्रम विभाजन एवं विशेषीकरण - नगरों में श्रम विभाजन की व्यवस्था का व्यवस्था पेशों को मिलती है। यहां व्यक्ति अलग अलग कार्यों में लगे हैं। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति किसी कार्य का विशेषज्ञ होता है। श्रम विभाजन एवं विशेषीकरण के कारण पारस्परिक निर्भरता भी पैदा होती है।

४ आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र - नगर आर्थिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केन्द्र है। नगरों में सभी प्रकार के छोटे-बड़े उद्योग पाये जाते हैं। भारत में नगर व्यापारिक केन्द्र होते हैं यहीं से व्यापारिक गतिविधियों का संचालन होता है। इन उद्योगों के कारण ही गांवों से नगरों की ओर प्रवास होता है। अतः नगरों को आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र कहा जाता है।

५ द्वितीयक एवं औपचारिक सम्बन्धों की प्रधानता - नगरीय समुदाय में द्वितीयक एवं औपचारिक सम्बन्धों की प्रधानता होती है। इसका कारण व्यावसायिक व्यवस्था का होना है। ये सम्बन्ध हित प्रधान होते हैं। नगरीय समुदाय में अधिकांश लोग उन्हीं व्यक्तियों से सम्बन्ध बनाते हैं जिनसे उनके हितों की पूर्ति हो सके। यही कारण है कि नगरों में प्राथमिक सम्बन्धों की बजाय द्वितीयक सम्बन्धों की प्रधानता होती है।